ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
July-September 2024 : 1(4)69-70
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

विरेन्द्र जैन
नागपुर

Corresponding Author :
विरेन्द्र जैन
नागपुर

लघुकथा

आशिफा ने निकुंज को वीडियो कॉल किया तो पहली बार में उसने फोन उठाया नहीं, आशिफा ने फिर से उसे फोन किया। इस बार निकुंज ने फोन उठाया," निकुंज, कबसे तुम्हें वीडियो कॉल कर रही हूं, कहां थे तुम!"

निकुंज कुछ कह पाता उसके पहले ही आशिफा बोल पड़ी, "देखो! तुम्हारे नाम की मेहंदी मेरे हाथों पर कितनी जंच रही है। मामी कह रहीं थीं यदि तुमने अपना नाम इसमें ढूंढ लिया तो वो हमें उपहार के रूप में काश्मीर का हनीमून ट्रिप स्पॉसर करेंगी!"

निकुंज ने चुप्पी तोड़ते हुए कहा," आशिफा, तुमने न्यूज देखी, ज़ऱा टीवी खोलो !" और फोन कट कर दिया।

दरअसल, आशिफा को शुरू से ही पारंपरिक रिवाज से शादी करने का बहुत मन था। मेंहदी रचे हाथ, उन पर दर्जन भर चूड़ियां, ज़रदौजी वाला महंगा लहंगा, जाने कितने बार उसने अपनी ख़्वाहिशें निकुंज के साथ साझा की थी। कहते हैं ना कि मुश्किल से मिले प्यार की कीमत बहुत ज़्यादा होती है। निकुंज और आशिफा के रिश्ते को भी घर वालों ने बहुत ही कठिनाइयों के बाद अपनाया था। आशिफा ने ज़िद कर रखी थी कि लहंगा वो निकुंज की पसंद का ही पहनेगी। सच कहें तो मौहब्बत में ज़िद हक़ जताने की ज्यादा होती है ना कि उसे मनवाने की। निकुंज ने उसके सामने हार मान ली थी और एक बेहद खूबसूरत डिजाइनर लहंगा आशिफा के लिए ले आया था। उस लहंगे को ट्राई करने के समय जब आशिफा एक दुल्हन के रूप में उसके सामने आई तो निकुंज उससे अपनी नज़रें नहीं हटा पा रहा था। जितनी उसने कल्पना की थी उससे कहीं अधिक खूबसूरत वह लग रही थी। कानों में झुमके हाथों में चूड़ियां पैरों में पाजेब और आंखों में हया!

ख़ैर! आशिफा ने टीवी खोला तो न्यूज चैनल पड़ोसी देश के आक्रमण की ब्रेकिंग न्यूज़ सुना रहे थे। आशिफा का फोन बजा," यस सर ! आई विल बी रिपोर्टिंग

एट दी एलओसी टूमॉरो मॉर्निंग सर !" कहकर आशिफा ने सैल्यूट करते हुए फोन कट कर दिया।

निकुंज इतने समय में उसके घर पहुंच चुका था। आशिफा के परिवार वाले आशिफा से कह रहे थे कि शादी हो जाए फिर कल सुबह चली जाना। निकुंज ने आशिफा के हाथों को थामते हुए कहा," मैं शुरू से जानता हूं कि तुम्हारा फर्ज तुम्हारे लिए सबसे ऊपर है। मैं तुम्हें अपना जीवनसाथी मान चुका हूं, जल्दी आना रस्में हम तब निभा लेंगे।"

अगले पांच दिन जंग चलती रही और उन दोनों में कोई बात नहीं हो सकी।

आज एक महीने बाद एक बार फिर उनके विवाह की रात आई है। निकुंज लंबी चौड़ी बारात लेकर आशिफा के पास आया है। किंतु आज, हाथों में मेहंदी की जगह ज़ख़्मों के निशान, उपहार की जगह दवाइयों के डिब्बे, चूड़ियों की जगह स्लाइन की इंजेक्शन और डिजाइनर लहंगा पहने अपने पैरों पर खडी आशिफा की जगह व्हील चेयर पर बैठी दिव्यांग आशिफा थी।

जंग को त्योहार की तरह मनाकर लौटी आशिफा को निकुंज ने उसकी जंग रूपी जिंदगी को अपना लिया था।

•